Journal of Research and Development
A Multidisciplinary International Level Referred and Double Blind Peer Reviewed, Open Access
ISSN : 2230-9578 | Website: https://jrdrvb.org Volume-17, Issue-11(A)| November- 2025

Original Article

जनपद प्रयागराज में कृषि, पारिवारिक उद्योग और अन्य कार्यों में लगे मुख्य कर्मकरों का विकासखण्डवार विश्लेषण

साधना यादव[1], डॉ बी.पी.सिंह[2]
[1]शोध छात्रा, अवधेश प्रताप सिंह विश्वविद्यालय, रीवा (मध्य प्रदेश)
[2]शोध निदेशक,विभागाध्यक्ष,भूगोल विभाग,टी.आर. एस. शासकीय पीजी कॉलेज, रीवा (मध्य प्रदेश)

Manuscript ID:
JRD -2025-171112
ISSN: 2230-9578
Volume 17
Issue 11(A)
Pp. 76-83
November. 2025
Submitted: 16 Oct. 2025
Revised: 26 Oct. 2025
Accepted: 10 Nov. 2025
Published: 30 Nov. 2025

सारांश

प्रस्तुत शोधकार्य में जनपद प्रयागराज के विकासखण्डवार मुख्य कर्मकरों का विश्लेषण किया गया है, जिनका जीवन–यापन मुख्यतः कृषि, पारिवारिक उद्योगों एवं अन्य आजीविका सम्बन्धी कार्यों पर आधारित है। अध्ययन का उद्देश्य ग्रामीण अर्थव्यवस्था की संरचना, कृषि पर निर्भरता की स्थिति तथा गैर–कृषि क्षेत्रों में रोजगार के प्रसार का आकलन करना है। जनगणना एवं स्थानीय प्रशासनिक आंकड़ों के आधार पर प्राप्त तथ्यों से स्पष्ट होता है कि प्रयागराज जनपद में अब भी कृषि मुख्य व्यवसाय है, परंतु पारिवारिक उद्योगों एवं सेवा क्षेत्र में रोजगार की प्रवृत्ति भी धीरे–धीरे बढ़ रही है। विकासखण्डवार विश्लेषण से यह भी ज्ञात होता है कि सिंचाई सुविधाओं, भूमि की उर्वरता, शिक्षा स्तर एवं नगरीकरण की दर के अनुसार कार्य संरचना में भौगोलिक भिन्नताएं पाई जाती हैं। अतः यह अध्ययन ग्रामीण–आधारित आजीविका के विविध पहलुओं को उजागर करता है तथा रोजगार सृजन और सतत् ग्रामीण विकास के लिए उपयोगी दिशा–निर्देश प्रदान करता है।

मुख्य शब्द– *कृषि कर्मकर, पारिवारिक उद्योग, ग्रामीण रोजगार, सामाजिक–आर्थिक संरचना, ग्रामीण अर्थव्यवस्था।*

प्रस्तावना

भारत की अर्थव्यवस्था का मूल आधार कृषि है, जहाँ जनसंख्या का एक बड़ा भाग प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से कृषि एवं उससे सम्बन्धित कार्यों पर निर्भर है। ग्रामीण क्षेत्रों में कार्यरत कर्मकर न केवल खाद्यान्न उत्पादन में योगदान देते हैं, बल्कि वे पारिवारिक उद्योगों, लघु एवं कुटीर उद्योगों तथा विविध सेवाओं के माध्यम से ग्रामीण अर्थव्यवस्था को सशक्त बनाते हैं। अतः ग्रामीण क्षेत्रों के मुख्य कर्मकरों की स्थिति किसी भी क्षेत्र के सामाजिक–आर्थिक विकास का दर्पण होती है। जनपद प्रयागराज उत्तर प्रदेश के महत्वपूर्ण जनपदों में से एक है, जहाँ कृषि, पशुपालन, मछली पालन, हस्तशिल्प तथा पारंपरिक घरेलू उद्योग आज भी प्रमुख आजीविका के साधन हैं। यहाँ के ग्रामीण क्षेत्र कृषि पर अधिक निर्भर हैं, किन्तु आधुनिकता, शिक्षा एवं नगरीकरण के प्रभाव से पारिवारिक उद्योगों एवं गैर–कृषि कार्यों की ओर झुकाव भी बढ़ा है। विकासखण्डवार स्तर पर देखा जाए तो प्रयागराज के विभिन्न विकासखण्डो जैसे कि कौडिहार, होलागढ़, मांडा, मेजा, करछना, फूलपुर, हंडिया आदि में रोजगार की संरचना में पर्याप्त भौगोलिक एवं सामाजिक भिन्नताएं परिलक्षित होती हैं। कुछ क्षेत्रों में कृषि–प्रधान अर्थव्यवस्था विद्यमान है, जबकि कुछ विकासखण्डों में औद्योगिक या सेवा क्षेत्र से जुड़े कार्यों का विस्तार अधिक हुआ है। मुख्य कर्मकरों का विकासखण्डवार अध्ययन न केवल कृषि व पारिवारिक उद्योगों के योगदान को स्पष्ट करता है, बल्कि यह भी बताता है कि क्षेत्रीय संसाधनों, भौगोलिक अवस्थिति, शिक्षा स्तर एवं नगरीकरण की प्रक्रिया ने ग्रामीण रोजगार के स्वरूप को कैसे प्रभावित किया है। इस अध्ययन का उद्देश्य प्रयागराज जनपद में कृषि, पारिवारिक उद्योग तथा अन्य कार्यों में संलग्न मुख्य कर्मकरों का क्षेत्रीय विश्लेषण प्रस्तुत करना है, जिससे जनपद के ग्रामीण विकास के रुझानों एवं संभावनाओं को समझा जा सके।

अध्ययन क्षेत्र

अध्ययन क्षेत्र जनपद प्रयागराज उत्तर प्रदेश के दक्षिणी भाग में स्थित है, जिसकी पूर्व–पश्चिम चौड़ाई 96 किमी तथा उत्तर–दक्षिण लम्बाई 110 किमी है। इस जनपद का कुल भौगोलिक क्षेत्रफल 5482 वर्ग किमी है, जो प्रदेश के क्षेत्रफल का 2.25 प्रतिशत है।

Creative Commons (CC BY-NC-SA 4.0)
This is an open access journal, and articles are distributed under the terms of the Creative Commons Attribution-NonCommercial-ShareAlike 4.0 International Public License, which allows others to remix, tweak, and build upon the work noncommercially, as long as appropriate credit is given and the new creations ae licensed under the idential terms.

Address for correspondence:
साधना यादव, शोध छात्रा, अवधेश प्रताप सिंह विश्वविद्यालय, रीवा (मध्य प्रदेश)

How to cite this article:
यादव, . साधना ., & सिंह, . बी . पी . (2025). जनपद प्रयागराज में कृषि, पारिवारिक उद्योग और अन्य कार्यों में लगे मुख्य कर्मकरों का विकासखण्डवार विश्लेषण. Journal of Research and Development, 17(11(A)), 76–83. https://doi.org/10.5281/zenodo.17875404

Quick Response Code:
Website: https://jrdrvb.org/
DOI: 10.5281/zenodo.17875404
OPEN ACCESS

Journal of Research and Development
A Multidisciplinary International Level Referred and Double Blind Peer Reviewed, Open Access
ISSN : 2230-9578 | Website: https://jrdrvb.org Volume-17, Issue-11(A)| November- 2025

क्षेत्र का अक्षांशीय विस्तार 24°48′ से 25°47′ उत्तरी अक्षांश तथा देशान्तरीय विस्तार 81°30′ से 82°22′ पूर्वी देशान्तर तक फैला हुआ है। जनपद की सीमाएँ उत्तर में प्रतापगढ़, उत्तर–पूर्व में जौनपुर, पूर्व में संत रविदास (भदोही), दक्षिण–पूर्व में मिर्जापुर, पश्चिम में कौशाम्बी, दक्षिण–पश्चिम में चित्रकूट तथा दक्षिण में मध्य प्रदेश के रीवा जनपद से लगी हैं।प्रशासनिक प्रबंधन हेतु अध्ययन क्षेत्र को 8 तहसीलो– सोरांव, फूलपुर, बारा, करछना, इलाहाबाद, हंडिया, मेजा एवं कोरांव में विभाजित किया गया है। विकास कार्यों के संचालन एवं योजना क्रियान्वयन के लिए इसे 20 विकासखण्डों में बांटा गया हैं।

मानचित्र सं. 1 अवस्थिति एवं विस्तार

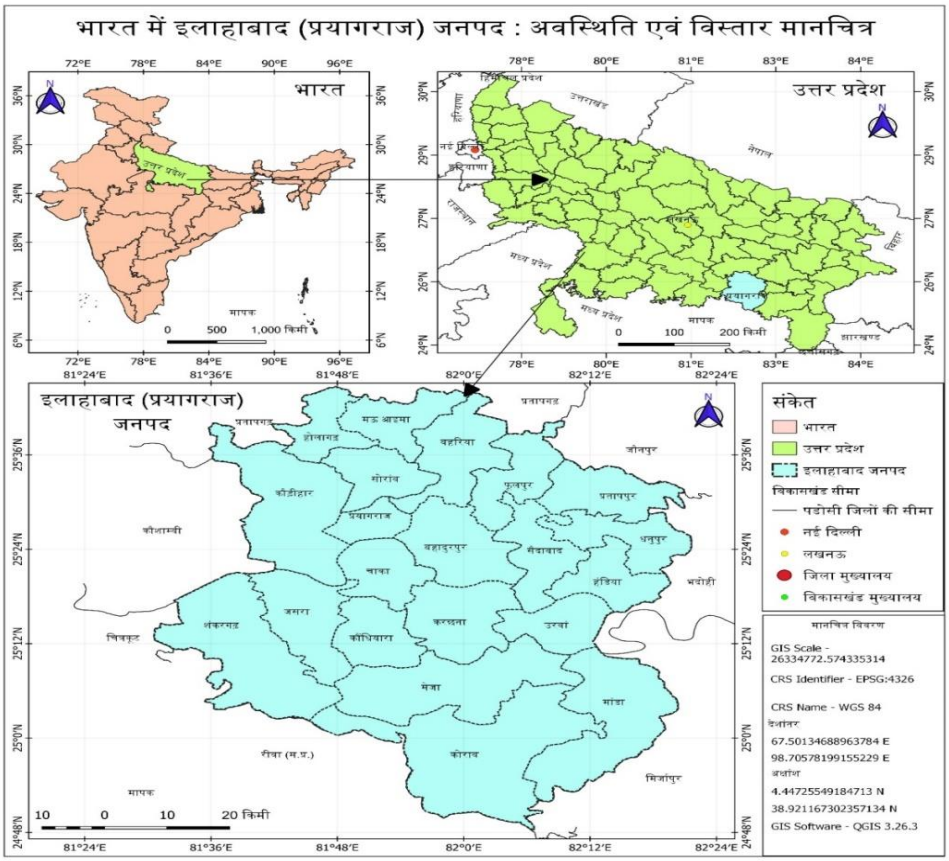

शोध के उद्देश्य

- जनपद प्रयागराज के विभिन्न विकासखण्डों में कुल मुख्य कर्मकरों के प्रतिशत वितरण का अध्ययन करना।
- मुख्य कर्मकरों में से कृषि कार्यों में संलग्न जनसंख्या के प्रतिशत का विकासखण्डवार विश्लेषण करना।
- पारिवारिक उद्योगों में कार्यरत मुख्य कर्मकरों के अनुपात का क्षेत्रीय अध्ययन करना।
- जनपद प्रयागराज में आर्थिक संरचना एवं रोजगार के स्वरूप को समझना और उसके स्थानिक वितरण का मूल्यांकन करना।
- अध्ययन से प्राप्त आँकड़ों के आधार पर भविष्य में रोजगार सृजन और ग्रामीण विकास की संभावनाओं पर सुझाव प्रस्तुत करना।

शोध विधि

- द्वितीयक आँकड़े जनगणना विभाग, जिला सांख्यिकी कार्यालय प्रयागराज, एवं विकासखण्डवार आर्थिक अभिलेखों से प्राप्त किए गए हैं।
- प्रत्येक विकासखंड के लिए कुल जनसंख्या, कुल मुख्य कर्मकर, कृषि में लगे कर्मकर और पारिवारिक उद्योग में लगे कर्मकरों का प्रतिशत निकाला गया।
- इन आँकड़ों के आधार पर प्रतिशत वितरण, औसत, अधिकतम एवं न्यूनतम मूल्यों का विश्लेषण किया गया।
- प्राप्त परिणामों को तालिकाओं, आरेखों के माध्यम से प्रदर्शित किया गया।

कुल मुख्य कर्मकरों

जनपद प्रयागराज में विकासखण्डवार कुल मुख्य कर्मकरों का कुल जनसंख्या में प्रतिशत वितरण कार्य शक्ति की क्षेत्रीय विविधता को दर्शाता है। वर्ष 2023 में प्रयागराज जनपद के सभी 23 विकासखण्डों में मुख्य कर्मकरों का प्रतिशत औसतन 20.87 प्रतिशत रहा है। कुछ विकासखण्ड जैसे शंकरगढ़ (26.35 प्रतिशत), कोरांव (25.71 प्रतिशत), मऊआइमा (23.8 प्रतिशत), भगवतपुर (22.83 प्रतिशत), जसरा (22.28 प्रतिशत), कौधियारा (22.38 प्रतिशत), फूलपुर (22.66 प्रतिशत) तथा कौड़िहार (21.95 प्रतिशत) में

Journal of Research and Development
A Multidisciplinary International Level Referred and Double Blind Peer Reviewed, Open Access
ISSN : 2230-9578 | Website: https://jrdrvb.org Volume-17, Issue-11(A)| November- 2025

मुख्य कर्मकरों की औसत से अधिक रही है, जो वहाँ के श्रम–नियोजन, ग्रामीण रोजगार व उत्पादन गतिविधियों की सुदृढ़ता को दर्शाता है। वहीं, बहादुरपुर (17.64प्रतिशत), उरुवा (17.21प्रतिशत) जैसे कुछ विकासखण्डों में यह प्रतिशत अपेक्षाकृत कम रहा है, जिससे स्पष्ट होता है कि वहाँ रोजगार की स्थिति अन्य क्षेत्रों की अपेक्षा कमजोर या सीमित है। विकासखण्डवार कार्य शक्ति की क्षेत्रीय असमानता के पीछे जनसंख्या घनत्व, सामाजिक–सांस्कृतिक कारक, शिक्षा, औद्योगिकीकरण एवं कृषिगत विकास की दर जैसे घटक कारक हो सकते हैं। जिले के उत्तरी एवं पूर्वी भागों में कर्मकरों का प्रतिशत अपेक्षाकृत अधिक देखने को मिलता है, जबकि दक्षिणी क्षेत्रों में यह घटता है, जिससे वहां संसाधनों, अवस्थापना व रोजगार अवसरों की कमी का संकेत मिलता है। इस प्रकार प्रयागराज जनपद में विकासखण्डवार मुख्य कर्मकरों की भागीदारी क्षेत्रीय विकास, श्रम नीति निर्धारण एवं सामाजिक–आर्थिक नियोजन में एक महत्वपूर्ण आधार प्रस्तुत करती है। यह विवरण नीति–निर्माताओं के लिए ग्रामीण विकास एवं रोजगार सृजन के लिए मार्गदर्शक सिद्ध हो सकता है।

सारणी क्रमांक–1

जनपद प्रयागराज में विकासखण्डवार कुल मुख्य कर्मकरो का कुल जनसँख्या से प्रतिशत-2023	
विकासखण्ड	**प्रतिशत**
कौड़िहार	21.95
होलागढ़	20.23
मऊआइमा	23.8
सोरांव	20.82
बहरिया	19.72
फूलपुर	22.66
बहादुरपुर	17.64
प्रतापपुर	18.19
सैदाबाद	18.93
धनुपुर	19.05
हण्डिया	18.54
जसरा	22.28
शंकरगढ़	26.35
चाका	20.37
करछना	20.89
कौधियारा	22.38
उरूवा	17.21
मेजा	20.47
कोरांव	25.71
माण्डा	18.78
सहसों	21.83
श्रृंगवेरपुर	19.4
भगवतपुर	22.83
समस्त विकासखण्ड	20.87

Journal of Research and Development
A Multidisciplinary International Level Referred and Double Blind Peer Reviewed, Open Access
ISSN : 2230-9578 | Website: https://jrdrvb.org Volume-17, Issue-11(A)| November- 2025

स्रोत– जिला सांख्यिकी पत्रिका 2023

आरेख क्रमांक–1

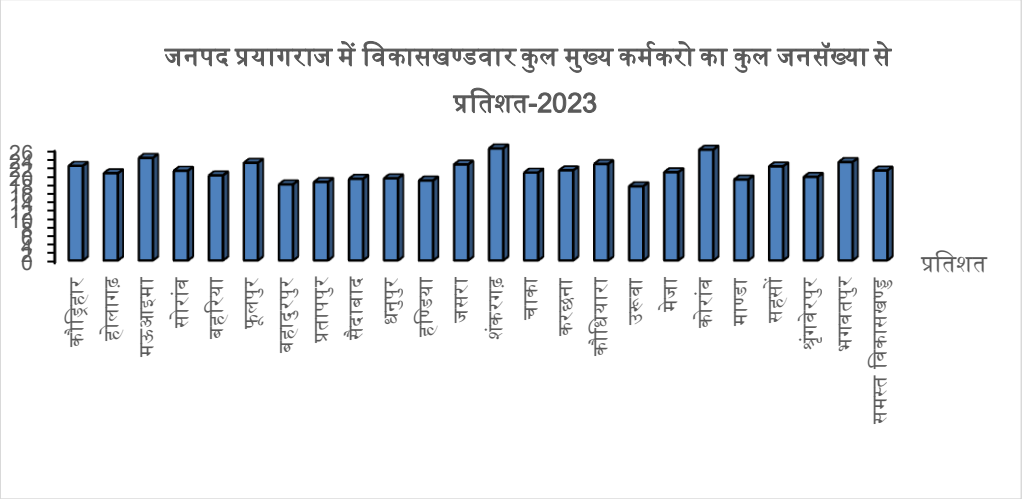

कृषि में लगे कर्मकरों

प्रयागराज जिले के सभी विकासखण्डों में कृषि में लगे मुख्य कर्मकरों का कुल औसत 2023 के सन्दर्भ में 59.39 प्रतिशत है। इसका अर्थ है कि समग्र जिले में मुख्य कर्मकरों का लगभग 59.39 प्रतिशत भाग प्रत्यक्ष रूप से कृषि कार्यों में संलग्न है। यह औसत इस बात को इंगित करता है कि प्रयागराज जिले की ग्रामीण अर्थव्यवस्था प्रमुख रूप से कृषि पर निर्भर है और रोजगार का मुख्य स्रोत अभी भी कृषिगत गतिविधियां ही हैं। कृषि क्षेत्र में क्षेत्रीय रूप से विविधता देखी जाती है–कुछ विकासखण्ड जैसे कोरांव (84.09प्रतिशत), मेजा (70.13प्रतिशत), शंकरगढ़ (67.54 प्रतिशत), बहरिया (67.25प्रतिशत), मऊआइमा (65.77प्रतिशत) आदि में कृषि कर्मकरों की भागीदारी कुल औसत से कहीं अधिक है, जबकि बहादुरपुर (44.15प्रतिशत), चाका (35.22प्रतिशत), सैदाबाद (46.10प्रतिशत) जैसे क्षेत्रों में यह प्रतिशत औसत से कम रहा। इस भिन्नता के पीछे भूमि की उपलब्धता, सिंचाई सुविधा, कृषि की उत्पादकता, ग्रामीण विकास की योजनाएं एवं वैकल्पिक रोजगार की संभावना जैसी स्थानीय कारक उत्तरदायी हैं। यह औसत न केवल जिले के कृषिगत समाज को दर्शाता है, बल्कि यह नीति नियोजन हेतु भी महत्वपूर्ण संकेतक है। इससे स्पष्ट होता है कि संतुलित क्षेत्रीय विकास के लिए जिन खण्डों में कृषि कर्मकरों का प्रतिशत कम है, वहां कृषि आधारित सहायक सुविधाओं और ग्रामीण रोजगार के अन्य अवसरों को पैदा करने की आवश्यकता है, जबकि उच्च कृषि सहभागिता वाले क्षेत्रों में नवाचार, तकनीकी प्रसार एवं बाजार सुविधा मजबूत करना जरूरी है

सारणी क्रमांक–2

जनपद प्रयागराज में विकासखण्डवार कृषि मे लगे कर्मकरो का कुल मुख्य कर्मकरो से प्रतिशत-2023	
विकासखण्ड	**प्रतिशत**
कौड़िहार	58.39
होलागढ़	62.96
मऊआइमा	65.77
सोरांव	51.37
बहरिया	67.25
फूलपुर	62.63
बहादुरपुर	44.15
प्रतापपुर	64.06
सैदाबाद	46.1
धनुपुर	57.8
हण्डिया	57.58
जसरा	62.88

Journal of Research and Development
A Multidisciplinary International Level Referred and Double Blind Peer Reviewed, Open Access
ISSN : 2230-9578 | Website: https://jrdrvb.org Volume-17, Issue-11(A)| November- 2025

शंकरगढ़	67.54
चाका	35.22
करछना	59.52
कौधियारा	64.79
उरूवा	46.98
मेजा	70.13
कोरांव	84.09
माण्डा	65.51
सहसों	59.35
श्रृंगवेरपुर	62.19
भगवतपुर	49.73
समस्त विकासखण्ड	59.39

स्रोत– जिला सांख्यिकी पत्रिका 2023

आरेख क्रमांक–2

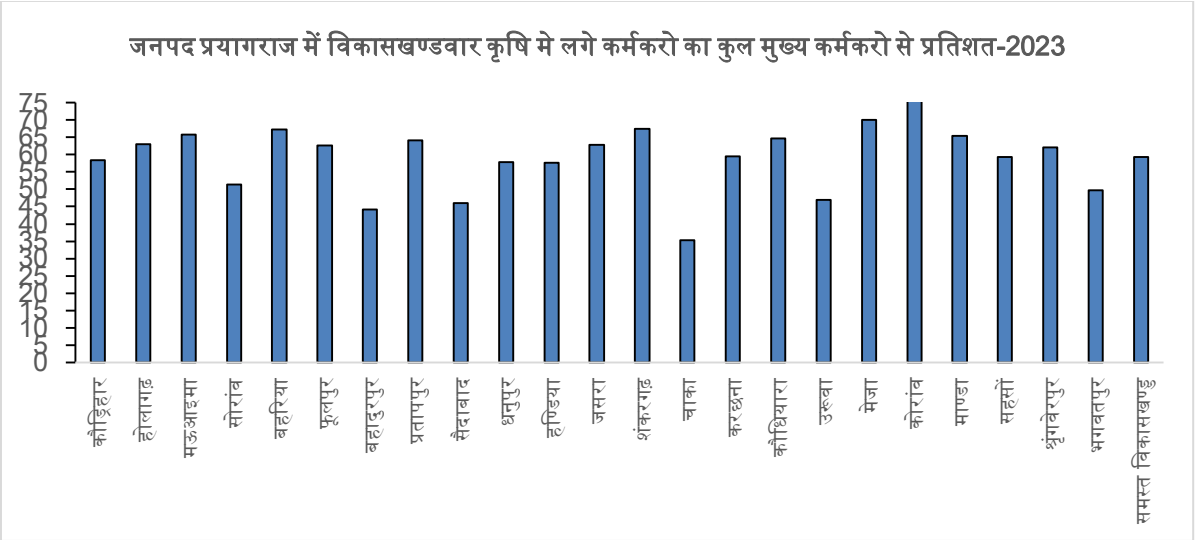

पारिवारिक उद्योग

जनपद प्रयागराज के विकासखण्डवार मुख्य कर्मकरों में पारिवारिक उद्योग में लगे कर्मकरों का औसत 2023 में 8.46 प्रतिशत रहा है। यह आंकडा अध्ययन क्षेत्र में मुख्य कर्मकर वर्ग की वह भागीदारी दर्शाता है, जो पारिवारिक अथवा घरेलू उद्योगों में संलग्न है। जिले के 23 विकासखण्डों में पारिवारिक उद्योग का प्रतिशत 4.09 प्रतिशत (शंकरगढ़) से लेकर 16.91प्रतिशत (चाका) तक विविधता लिए हुए है। अधिकतम पारिवारिक उद्योग कर्मकरों की भागीदारी चाका (16.91 प्रतिशत), धनुपुर (14.98 प्रतिशत), सैदाबाद (14.92 प्रतिशत) और कौरधियारा (11.01 प्रतिशत) में रही है, जिससे यहां पारंपरिक, हस्तशिल्प और स्थानीय घरेलू उद्योगों की सुदृढ़ उपस्थिति का अनुमान होता है। वहीं, न्यूनतम प्रतिशत कोरांव (4.45 प्रतिशत), शंकरगढ़ (4.09 प्रतिशत), मेजा (5.34 प्रतिशत), माण्डा (5.33 प्रतिशत), जसरा (6 प्रतिशत) जैसे क्षेत्रों में पाया गया, जिससे स्पष्ट होता है कि इन क्षेत्रों में पारिवारिक औद्योगिक गतिविधियां अपेक्षाकृत कमजोर या सीमित हैं। औसत के आधार पर देखा जाए तो समग्र जिले में हर 100 मुख्य कर्मकरों में लगभग 8 से 9 कर्मकर पारिवारिक उद्योगों से जुड़े हुए हैं। यह प्रवृत्ति ग्रामीण अर्थव्यवस्था में घरेलू हुनर, स्वरोजगार, पारंपरिक शिल्प एवं लघु उद्योगों को सतत रोजगार का स्रोत सिद्ध करती है। ऐसे उद्योग सामाजिक और सांस्कृतिक परंपरा की निरंतरता और स्थानीय रोजगार सृजन में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। यह विश्लेषण नीति–निर्माताओं के लिए क्षेत्रीय घरेलू उद्योग विकास, कौशल उन्नयन और स्वरोजगार प्रोत्साहन कार्यक्रमों की दिशा में मार्गदर्शक सिद्ध हो सकता है, ताकि परंपरागत उद्योगों को ग्रामीण विकास की मुख्यधारा में लाया जा सके व रोजगार के अवसर बढ़ाए जा सकें।

Journal of Research and Development
A Multidisciplinary International Level Referred and Double Blind Peer Reviewed, Open Access
ISSN : 2230-9578 | Website: https://jrdrvb.org Volume-17, Issue-11(A)| November- 2025

सारणी क्रमांक–3

जनपद प्रयागराज में विकासखण्डवार पारिवारिक उद्योग में लगे कर्मकरों का कुल मुख्य कर्मकरो से प्रतिशत-2023	
विकासखण्ड	प्रतिशत
कौड़िहार	7.06
होलागढ़	7.44
मऊआइमा	6.14
सोरांव	5.91
बहरिया	7.15
फूलपुर	8.48
बहादुरपुर	10.67
प्रतापपुर	9.47
सैदाबाद	14.92
धनुपुर	14.98
हण्डिया	10.46
जसरा	6
शंकरगढ़	4.09
चाका	16.91
करछना	7.17
कौधियारा	11.01
उरूवा	9.9
मेजा	5.34
कोरांव	4.45
माण्डा	5.33
सहसों	6.96
श्रृंगवेरपुर	7.24
भगवतपुर	7.53
समस्त विकासखण्ड	8.46

Journal of Research and Development
A Multidisciplinary International Level Referred and Double Blind Peer Reviewed, Open Access
ISSN : 2230-9578 | Website: https://jrdrvb.org Volume-17, Issue-11(A)| November- 2025

स्रोत– जिला सांख्यिकी पत्रिका 2023
आरेख क्रमांक–3

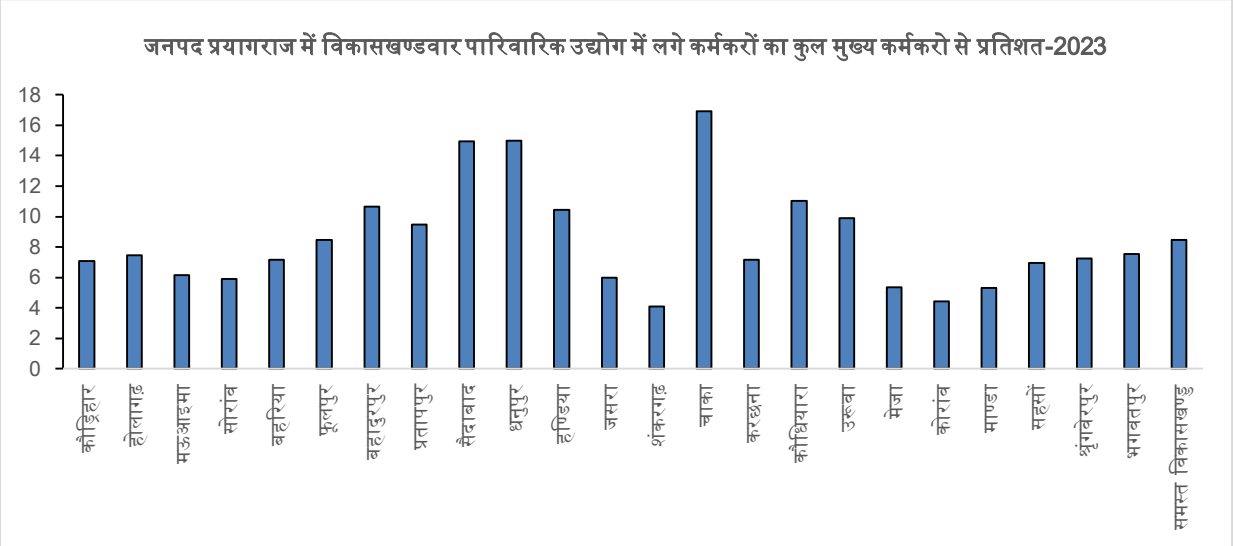

निष्कर्ष

जनपद प्रयागराज में मुख्य कर्मकरों की कार्य संरचना स्थानिक दृष्टि से विविध है। कुछ क्षेत्रों में कृषि का प्रभुत्व है, जबकि अन्य क्षेत्रों में पारिवारिक उद्योगों और अन्य कार्यों का विस्तार हो रहा है। समग्र रूप से यह अध्ययन दर्शाता है कि प्रयागराज की ग्रामीण अर्थव्यवस्था कृषि–आधारित होते हुए भी संक्रमण के दौर में है – जहाँ पारंपरिक रोजगार स्वरूपों के साथ–साथ वैकल्पिक उद्योग, सेवा क्षेत्र और कुटीर उद्योग नई संभावनाएँ उत्पन्न कर रहे हैं। भविष्य में रोजगार के स्थायित्व और ग्रामीण विकास के लिए कृषि के साथ–साथ लघु एवं मध्यम उद्योगों को प्रोत्साहन देना आवश्यक है।

सन्दर्भ ग्रन्थ

1. Census of India. (2011). Primary Census Abstract, Uttar Pradesh. Office of the Registrar General & Census Commissioner, India.
2. Government of Uttar Pradesh. (2023). District Statistical Handbook: Prayagraj. Directorate of Economics and Statistics, Lucknow.
3. Agarwal, A. (2019). Rural Economy and Livelihood Patterns in India. New Delhi: Concept Publishing Company.
4. Bhattacharya, S. N. (2018). Agrarian Transformation in India. New Delhi: Rawat Publications.
5. Singh, R. B. (2017). Geography of Agricultural Systems in India. New Delhi: Concept Publishing.
6. Sharma, R. K. (2020). Employment and Livelihood Diversification in Rural Uttar Pradesh. Indian Journal of Regional Studies, 42(3), 56–72.
7. Planning Commission of India. (2014). Report on Rural Employment and Agricultural Labour in India. Government of India.
8. Ministry of Rural Development. (2022). Annual Report on Rural Livelihoods. Government of India.
9. Kumar, S., & Singh, P. (2021). Spatial variations in occupational structure: A case study of Eastern Uttar Pradesh. Journal of Economic Geography of India, 63(2), 88–104.
10. Yadav, M. P. (2020). Agriculture and Rural Development in North India. Jaipur: Rawat Publications.
11. Misra, R. P. (2016). Regional Planning and Development: Concepts and Case Studies. New Delhi: Concept Publishing.
12. Srivastava, A. (2019). Occupational shifts and socio-economic changes in rural India. Economic Affairs, 64(4), 901–913.
13. National Sample Survey Office (NSSO). (2021). Periodic Labour Force Survey (PLFS): 2020–21. Ministry of Statistics and Programme Implementation, Government of India.
14. Singh, S. K. (2015). Rural Industrialization in India: Problems and Prospects. New Delhi: Deep and Deep Publications.
15. Chand, R. (2018). Changing structure of rural employment in India. Indian Journal of Agricultural Economics, 73(1), 1–17.
16. Directorate of Economics and Statistics. (2023). Statistical Abstract of Uttar Pradesh. Government of Uttar Pradesh.
17. Jain, P., & Gupta, R. (2020). Patterns of main and marginal workers in Uttar Pradesh. Population Geography Journal, 42(1), 55–68.

Journal of Research and Development
A Multidisciplinary International Level Referred and Double Blind Peer Reviewed, Open Access
ISSN : 2230-9578 | Website: https://jrdrvb.org Volume-17, Issue-11(A)| November- 2025

18. World Bank. (2022). Rural Employment and Structural Transformation in India. Washington, DC: World Bank Group.
19. Singh, T. (2021). Spatial analysis of rural workforce in Uttar Pradesh. Geographical Review of India, 83(3), 76–92.
20. Desai, S., & Vanneman, R. (2019). India Human Development Survey-II (IHDS-II), 2011–12. ICPSR.
21. Pandey, N. (2018). Rural livelihoods and gendered employment in Eastern Uttar Pradesh. Journal of Social and Economic Development, 20(2), 234–249.
22. National Institution for Transforming India (NITI Aayog). (2023). Report on Agriculture and Rural Labour Productivity in India. Government of India.
23. Dutta, M., & Bose, S. (2021). Employment diversification and rural economy in India: A regional analysis. Asian Journal of Development Research, 9(4), 99–117.
24. Singh, A. K. (2017). Patterns of Employment and Occupational Change in Rural India. New Delhi: Discovery Publishing House.
25. United Nations Development Programme (UNDP). (2022). Human Development Report 2022: Uncertain Times, Unsettled Lives. New York: UNDP.